हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला में वन-महोत्सव का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा दिनांक 22.07.2016 को हिमालयी सम शीतोषण वृक्ष वाटिका, पॉटर हिल, शिमला में 67वें वन महोत्सव का आयोजन किया गया, जिसका शुभारम्भ संस्थान के निदेशक, डॉ. वी. पी. तिवारी ने बुरांस (*Rhododendron arboreum*) का श्रेष्ठ अनुवांशिक गुणों वाला पौधा लगा कर किया ।

इस अवसर पर अपने संबोधन में डॉ. तिवारी नें कहा कि वन महोत्सव देश में वृक्षारोपण को प्रोत्साहन देने के लिए प्रति वर्ष जुलाई माह में आयोजित किया जाने वाला एक महोत्सव है । तत्कालीन कृषि मंत्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने इसका सूत्रपात वर्ष 1950 में किया था। यह 1960 के दशक में पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक परिवेश के प्रति संवेदनशीलता को अभिव्यक्त करने वाला एक आंदोलन था। डॉ. तिवारी नें कहा कि वृक्षारोपण से तात्पर्य बहुत अधिक संख्या में पेड़ों को लगाने से है । जैसा कि हम सभी जानते है कि वृक्ष प्रकृति एवं जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, इसके बिना हमारी प्रकृति और हमारे जीवन की परिकल्पना करना भी ब्यर्थ है। उन्होंने

आगे कहा कि वनस्पति आवरण में कमी के दुष्परिणाम देखने के लिए हमें बहुत दूर तक जाने या विश्व स्तर पर कोई खोज करने की आवश्यकता नहीं है, हम अपने आस पास आए छोटे छोटे परिवर्तनों से इसका अंदाजा लगा सकते है। डॉ. तिवारी नें कहा कि पूर्व में वन क्षेत्र अधिक होने के कारण पर्यावरण में संतुलन बना हुआ था, किन्तु कुछ वर्षों से वनों की गुणवत्ता में कमी होने के कारण पर्यावरण का संतुलन बिगड़ने लगा है और मौसम में बदलावा आ रहा है, अत: वृक्ष लगाना आवश्यक है ।

संस्थान के समूह समन्वयक (शोध), डॉ. कुलराज सिंह कपूर ने इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि वनों का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण योगदान है । वृक्ष वातावरण में उत्सर्जित कार्बन डाई आक्साईड गैस को ग्रहण कर हमारे जीवन के लिये अति आवश्यक आक्सीजन देते हैं । इसके अतिरिक्त हमें अनेक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभ होने के साथ साथ पर्यावरण में संतुलन भी बना रहता है। भविष्य में पर्यावरण को संतुलित रखना है तो वृक्ष लगाना अति आवश्यक है।

कार्यक्रम के संयोजक, श्री प्रदीप भारद्वाज, विस्तार अधिकारी नें पर्यावरण संरक्षण व जलवायु परिवर्तन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों पर प्रकाश डाला और इस अवसर पर उपस्थित सभी अधिकारियों, वैज्ञानिकों व कर्मचारियों का धन्यवाद किया ।

वन महोत्सव की झलकियाँ

67वां वन

मीडिया कवरेज

एचएफआरआई में वन महोत्सव

शिमला। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की ओर से वृक्ष वाटिका पॉटर हिल में 67वें वन महोत्सव का आयोजन किया गया। महोत्सव का शुभारंभ संस्थान के निदेशक डा. वीपी तिवारी ने बुरांस का पौधा लगाकर किया। तिवारी ने कहा कि वन महोत्स प्रति वर्ष जुलाई माह में आयोजित किया जाता है। कहा कि इसकी शुरुआत तत्कालीन कृषि मंत्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने 1950 में किया था। यह 1960 के दशक में पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक परिवेश के प्रति संवेदनशीलता को अभिव्यक्त करने वाला एक आंदोलन था। संस्थान के समूह समन्वयक (शोध) डा. कुलराज सिंह कपूर, प्रदीप भारद्वाज समेत कई वैज्ञानिक व अधिकारी मौजूद रहे।

पौधा लगाने के बाद पानी डालते एचएफआरआई के निदेशक वीपी तिवारी। अमर उजाला

अमर उजाला

पॉटरहिल में रोपी हरियाली

67वें वनमहोत्सव पर कार्यक्रम का हुआ आयोजन

▪ दिव्य हिमाचल ब्यूरो, शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित की जा रही हिमालयी सम-शीतोषण वृक्ष-वाटिका पॉटरहिल शिमला में 67वें वनमहोत्सव का आयोजन किया गया, जिसका शुभारंभ संस्थान के निदेशक डा. वीपी तिवारी ने बुरांस का श्रेष्ठ अनुवांशिक गुणों वाला पौधा लगा कर किया।

इस अवसर पर डा. तिवारी नें कहा कि वन महोत्सव भारत सरकार द्वारा पौधारोपण को प्रोत्साहन देने के लिए प्रति वर्ष जुलाई माह में आयोजित किया जाता है। तत्कालीन कृषि मंत्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने इसका सूत्रपात वर्ष 1950 में किया था। यह 1960 के दशक में पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक परिवेश के प्रति संवेदनशीलता को अभिव्यक्त करने वाला एक आंदोलन था। पौधारोपण से तात्पर्य बहुत अधिक संख्या में पेड़ों को लगाने से है, जैसा कि हम सभी जानते हैं कि वृक्ष हमारी प्रकृति एवं जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, इसके बिना हमारी प्रकृति और हमारे जीवन की परिकल्पना करना भी व्यर्थ है। वनस्पति आवरण में कमी के दुष्परिणाम देखने के लिए हमें बहुत दूर तक जाने या विश्व स्तर पर कोई खोज करने की आवश्यकता नहीं है।

संस्थान के समूह समन्वयक (शोध) डा. कुलराज सिंह कपूर ने कहा कि वनों का हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। कार्यक्रम के संयोजक प्रदीप भारद्वाज, विस्तार अधिकारी ने पर्यावरण संरक्षण व् जलवायु परिवर्तन जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों पर प्रकाश डाला।

EVERS
High
CORR

दिव्य हिमाचल Sun, 24 July 2016
epaper.divyahimachal.com/c/11975877

दिव्य हिमाचल

एचएफआरआई ने मनाया वन महोत्सव

शिमला | हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने शनिवार को संस्थान द्वारा विकसित की जा रही हिमालयी सम-शीतोष्ण वृक्ष-वाटिका, पॉटर हिल, शिमला में 67वें वन-महोत्सव का आयोजन किया। वन महोत्सव का शुभारंभ संस्थान के निदेशक, डॉ. वीपी तिवारी ने बुरांस का श्रेष्ठ अनुवांशिक गुणों वाला पौधा लगा कर किया गया।

तत्कालीन कृषि मंत्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने इसका सूत्रपात वर्ष 1950 में किया था। डॉ. तिवारी ने कहा कि वृक्षारोपण से तात्पर्य बहुत अधिक संख्या में पेड़ों को लगाने से है। संस्थान के समूह समन्वयक डॉ. कुलराज सिंह कपूर ने इस अवसर पर वनों के महत्व के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम के संयोजक, प्रदीप भारद्वाज, विस्तार अधिकारी ने पर्यावरण संरक्षण व जलवायु परिवर्तन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में भी जानकारी लोगों को दी गई।

दैनिक भास्कर

हिमालयन वन अनुसंधान में मनाया 67वां वन महोत्सव

हिमाचल दस्तक ब्यूरो। शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान में शनिवार को हिमालयी सम-शीतोषण वृक्ष-वाटिका में 67वें वन महोत्सव का आयोजन किया गया।

वन महोत्सव का शुभारंभ संस्थान निदेशक डॉ. वीपी तिवारी ने बुरांस का पौधा लगाकर किया। इस अवसर उन्होंने कहा कि वन महोत्सव भारत सरकार द्वारा वृक्षारोपण को प्रोत्साहन देने के लिए प्रति वर्ष जुलाई में आयोजित किया जाने वाला एक महोत्सव है। तत्कालीन कृषि मंत्री कन्हैया लाल, माणिक लाल मुंशी ने इसका सूत्रपात वर्ष 1950 में किया था। यह 1960 के दशक में पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक परिवेश के प्रति संवेदनशीलता को अभिव्यक्त करने वाला एक आंदोलन था। वृक्षारोपण से तात्पर्य बहुत अधिक संख्या में पेड़ों को लगाने से है। वृक्ष हमारी प्रकृति एवं जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, इसके बिना हमारी प्रकृति और हमारे जीवन की परिकल्पना करना भी व्यर्थ है। उन्होंने कहा कि वनस्पति आवरण में कमी के दुष्परिणाम देखने के लिए हमें बहुत दूर तक जाने या विश्व-स्तर पर कोई खोज करने की आवश्यकता नहीं है। हम अपने आस-पास आए छोटे-छोटे परिवर्तनों से इसका अंदाजा लगा सकते हैं। पूर्व में वन क्षेत्र अधिक होने के कारण पर्यावरण में संतुलन बना हुआ था, किंतु कुछ सालों से वनों की गुणवत्ता में कमी होने के कारण पर्यावरण का संतुलन बिगड़ने लगा है और मौसम में बदलावा आ रहा है, अतः वृक्ष लगाना आवश्यक है। इस अवसर पर कार्यक्रम संयोजक प्रदीप भारद्वाज, समूह समन्वयक अनुसंधान डॉ. कुलराज सिंह कपूर सहित अधिकारियों, वैज्ञानिकों व कर्मचारी मौजूद रहे।

संस्थान निदेशक ने बुरांस का पौधा लगाकर किया महोत्सव का शुभारंभ

हिमाचल दस्तक

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान में वन-महोत्सव का आयोजन

शिमला, 23 जुलाई। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा संस्थान द्वारा विकसित की जा रही हिमालयी सम-शीतोषण वृक्ष-वाटिका पॉटर हिल शिमला में 67वें वन महोत्सव का आयोजन किया गया, जिसका शुभारंभ संस्थान के निदेशक डॉ. वीपी तिवारी ने बुरांस का श्रेष्ठ अनुवांशिक गुणों वाला पौधा लगा कर किया गया। इस अवसर पर अपने संबोधन में डॉ. तिवारी नें कहा कि वन महोत्सव भारत सरकार द्वारा वृक्षारोपण को प्रोत्साहन देने के लिए प्रति वर्ष जुलाई माह में आयोजित किया जाने वाला एक महोत्सव है। तत्कालीन कृषि मंत्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने इसका सूत्रपात वर्ष 1950 में किया था। यह 1960 के दशक में पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक परिवेश के प्रति संवेदनशीलता को अभिव्यक्त करने वाला एक आंदोलन था। डॉ. तिवारी ने कहा कि वृक्षारोपण से तात्पर्य बहुत अधिक संख्या में पेड़ों को लगाने से है। उन्होंने कहा कि वनस्पति आवरण में कमी के दुष्परिणाम देखने के लिए हमें दूर तक जाने की आवश्यकता नहीं है।

आपका फैसला

वृक्ष प्रकृति व जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा : तिवारी

उधर, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित की जा रही हिमालयी सम शीतोषण वृक्ष–वाटिका, पॉटरहिल शिमला में 67वें वन महोत्सव का आयोजन किया गया, जिसका शुभारंभ संस्थान के निदेशक डा.वी.पी. तिवारी ने बुरांस अनुवांशिक गुणों वाला पौधा लगाकर किया। डा. तिवारी ने कहा कि वृक्षारोपण से तात्पर्य बहुत अधिक संख्या में पेड़ों को लगाने से है, जैसा कि हम सभी जानते हैं कि वृक्ष हमारी प्रकृति एवं जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, इसके बिना हमारी प्रकृति और हमारे जीवन की परिकल्पना करनाभी व्यर्थहै।उन्होंने कहाकि वनस्पति आवरण में कमी के दुष्परिणाम देखने के लिए हमें बहुत दूर तक जाने या विश्व स्तर पर कोई खोज करने की आवश्यकता नहीं है। हम अपने आसपास आए छोटे–छोटे परिवर्तनों से इसका अंदाजा लगा सकते हैं। डा. तिवारी ने कहा कि पूर्व में वन क्षेत्र अधिक होने के कारण पर्यावरण में संतुलन बना हुआ था किन्तु कुछ वर्षों से वनों की गुणवत्ता में कमी होने और कारण पर्यावरण का संतुलन बिगड़ने लगा है और मौसम में बदलाव आ रहा है। ऐसे में पौधे लगाना आवश्यक हैं। उन्होंने कहा कि वन महोत्सव भारत सरकार द्वारा पौधारोपण को प्रोत्साहन देने के लिए प्रति वर्ष जुलाई माह में आयोजित किया जाने वाला एक महोत्सव है।

पंजाब केसरी ई-पेपर Sun, 24 July 2016 epaper.punjabkesari.

पंजाब केसरी